प्रस्तावना ....

परमात्मा के शासन में पुर्वाचायोने साधु भगवंतो की समाचारी में तिन मुख्य कार्य बताये है। (१) आहार (२) विहार (३) निहार उसमे इस पुस्तिका में विहार को ध्यान में रखकर परमात्माने जो नवकल्पी विहार बताया है। साधु-साध्वीजी भगवंतो को तो ८ महिने सतत परमात्मा की आज्ञापूर्वक जयणापूर्वक, धुंसरी प्रमाण समद्रष्टि रखकर विहार करने को कहा है। एक ही स्थान में ज्यादा से ज्यादा एक महिना रह सकते है। उससे ज्यादा नहिं, क्योंकी १ माह से उपर रहे तो वहाँ के श्रावकोको श्रमणसंस्था के प्रति अप्रिती हो सकती है तथा साधु को उस गांव के भक्त वर्ग के प्रति मोह हो सकता है। इसी कारण से नवकल्पी विहार परमात्मा ने बताया है।

इस पुस्तिका में विदर्भ के प्रांतो में अलग अलग गांव के बारे में कितने किलोमिटर, मंदिर, घर, उपाश्रय स्थानक, भवन तथा वहॉ के गुरुभक्त आदि की माहिती दी है। जिसके द्वारा कोई भी साधू-साध्वीजी भगवंतो को विहार में सुगमता रहे इसका पू. सागरजी म.सा. के समुदाय के पू. सुयशाश्रीजी म.सा. एवं कल्धर्माश्रीजी म.सा. की कृपा से मेरे द्वारा संकलन करने का छोटा सा प्रयास किया है।

इस पुस्तिका में ज्यादा से ज्यादा संकलन करने का प्रयास किया है। जो साधु साध्वीजी भ. इस विदर्भ में की भूमि को पावन कर चुके है उन्ही के जरीये सब रास्ते प्राप्त किये है उसमें किलोमिटर अधिक या कम भी हो सकते है। मुझसे कुछ क्षति हो गई हो तो क्षमा करना।

।। मिच्छामि दुक्कडम् ।।
।। शुभास्ते सन्तु पन्या नः ।।

पू.पुष्पदंताश्रीजी म.सा. के शिष्य
डॉ. हर्षरत्नाश्रीजी